B.A. Part - I
Paper - I
Lecture - 18
Dr. Sunita Kumari
Assistant Professor
Marwari College Darbhanga.

Topic: सामाजिक स्तरीकरण
Social Stratification

सामाजिक स्तरीकरण वह व्यवस्था है जो समाज को विभिन्न स्तरों में विभाजन करके सामाजिक जीवन को व्यवस्थित बनाने का प्रयत्न करती है। प्रत्येक व्यक्ति और प्रत्येक समूह को एक विशेष स्तर प्रदान करके समाज को व्यवस्थित बनाने का प्रयत्न प्राचीन से ही होता रहा है। स्तरों-निर्माण की इसी प्रक्रिया का नाम 'सामाजिक स्तरीकरण' है।

Gisbert ने सामाजिक स्तरीकरण को परिभाषित करते हुए कहा है "सामाजिक स्तरीकरण का अर्थ समाज को कुछ ऐसे स्थायी समूहों और श्रेणियों में विभाजन कर देने वाली व्यवस्था से है जिसके अन्तर्गत सभी समूह और श्रेणियां उच्चता तथा अधीनता के सम्बन्धों द्वारा एक दूसरे से बंधी होती है।"

Sutherland and Woodward के अनुसार "स्तरीकरण केवल अन्तःक्रियाओं अथवा विभेदीकरण की ही एक प्रक्रिया है,

Scanned by CamScanner

जिसमें कुछ व्यक्तियों को दूसरे व्यक्तियों की तुलना में उच्च स्थिति प्राप्त होती है।

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर हम कह सकते हैं कि सामाजिक स्तरीकरण वह प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत कुछ सामाजिक गुणों अथवा नियमों के अनुसार समाज अनेक उच्च और निम्न समूहों में विभक्त हो जाता है यह समूह एक दूसरे से पृथक पृथक न रहकर कार्यात्मक रूप से एक-दूसरे के सहयोगी होते हैं तथा अपने-अपने कार्यों द्वारा सामाजिक व्यवस्था को दृढ़ बनाने में योगदान देते हैं।

सामाजिक स्तरीकरण की आवश्यकता
Necessity of soual stratification

सामाजिक स्तरीकरण को निम्नांकित आधारों पर समाज की एक अनिवार्य आवश्यकता के रूप में देखा जा सकता है —

1. प्रत्येक समाज चाहे वह शहरी हो या ग्रामीण कुछ पदों को उच्च समझा जाता है और कुछ को निम्न, क्योंकि किसी पद से सम्बन्धित भूमिका को पूरा करने के लिए अधिक योग्यता की आवश्यकता होती है जबकि कुछ पदों पर बिना उचित प्रशिक्षण के भी कार्य किया

जा सकता है। प्रत्येक पद के महत्व को देखते हुए उसके सम्बद्ध व्यक्तियों को अधिक अथवा कम पारिश्रमिक भी दिया जाता है। यह स्थिति समाज को विभिन्न स्तरों में विभाजित कर देती है जिसे रोक सकना किसी प्रकार भी सम्भव नहीं है।

2. समाज अपने सदस्यों की कुशलता और योग्यता में वृद्धि करने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करता रहता है। अगर एक जैसी सभी व्यक्तियों को समान सुविधाएँ प्रदान कर दी जाए तो उस दशा में कुछ व्यक्ति अपनी योग्यता से अधिक पुरस्कार प्राप्त करने लगेंगे जबकि कुछ व्यक्तियों की योग्यता तथा कुशलता कम होने लगेगी क्योंकि उन्हें अपनी योग्यता के अनुसार विभिन्न सुविधाएँ नहीं मिल सकेंगी। इस तरह दोनों ओर से समाज का सन्तुलन बिगड़ जाने की सम्भावना हो सकती है।

अतः समाज विभिन्न व्यक्तियों को भिन्न-भिन्न सामाजिक पद प्रदान करके सामाजिक व्यवस्था को सन्तुलित बनाए रखने का प्रयत्न करता है।

3. डेविस के अनुसार "सामाजिक असमानता अचेतन रूप से विकसित एक विधि है जिसके द्वारा समाज अपने सदस्यों को यह विश्वास दिलाता है कि सबसे अधिक महत्वपूर्ण पदों पर सबसे अधिक योग्य

व्यक्ति ही कार्य कर रहे हैं" यह स्थिति तभी समाप्त है जब प्रत्येक व्यक्ति को अपनी योग्यतानुसार कार्य करने का अवसर मिले।

Sweta Kumari
30/4/20.

Scanned by CamScanner